डॉ० सुनीता कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
सोगरा कॉलेज, बिहारशरीफ, नालंदा)

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष, पत्र -(4)

भक्तिकाल

जहाँ तक हम जानते हैं कि मध्यकाल या भक्तिकाल को दो भागों में विभाजित किया गया है — (1) पूर्वमध्यकाल या भक्तिकाल, (2) उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संवत् 1375 वि. से 1700 वि. तक के काल-खंड को हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल कहा है। डॉ० नगेन्द्र ने भक्तिकाल की समय सीमा 1350 ई० से 1650 ई० तक मानी है।

भक्ति आन्दोलन के उदय के कारण

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार — भारत में मुस्लिम शासकों का स्थापित होना प्रमुख कारण है। देश में मुसलमानों का शासन व्यवस्था होने के कारण हिन्दू जनता हताश, निराश एवं पराजित हो गई। परिणामतः पराजित मनोवृति में ईश्वर के प्रति भक्ति की ओर अनुराग होना स्वाभाविक था। हिन्दू जनता ने भक्तिभावना के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता दिखाकर पराजित मनोवृति का शमन किया। इसके साथ-साथ तात्कालिक धार्मिक परिस्थितियों ने भी भक्ति के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नाथ, सिद्ध योगी अपनी रहस्यदर्शी शुष्क वाणी में जनता को उपदेश दे रहे थे। भक्ति, प्रेम आदि हृदय के प्राकृत भावों से उनका कोई सामंजस्य न था। भक्तिभावना से ओतप्रोत

Scanned with CamScanner

साहित्य ने इस अभाव की पूर्ति की। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि भक्ति का मूल स्रोत दक्षिण भारत में था। जहाँ 7वीं शती में आलवार भक्तों ने जो भक्तिभावना प्रारंभ की उसे उत्तर भारत में फैलने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त हुई।

भक्ति-काल को लेकर विभिन्न विद्वानों के मत —

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शुक्लजी के मत से असहमति व्यक्त करते हुए कहा कि भक्तिभावना पराजित मनोवृत्ति की उपज नहीं है और न ही यह इस्लाम के बलात प्रचार के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई। उनका तर्क यह है कि हिन्दू सदा से आशावादी जाति रही है तथा किसी भी के ~~साहित्य~~ काव्य में निराशा का पुट नहीं है।

सर जार्ज ग्रियर्सन भक्ति आंदोलन का उदय ईसाई धर्म के प्रभाव से मानते हैं। उनका मत है कि रामानुजाचार्य को भावावेश एवं प्रेमोल्लास के धर्म का संदेश ईसाइयों से मिला। भारतीय धर्म साधना में भक्ति की एक सुस्पष्ट एवं सुदीर्घ परंपरा रही है। रामानुजाचार्य, रामानंद, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने अपने सिद्धांतों की स्थापना के द्वारा भक्तिभाव एवं अवतारवाद को दृढ़तर आधारों पर स्थापित किया, जिसे सूर, कबीर, मीरा, तुलसी ने काव्य रूप प्रदान किया।

आलवार भक्त —

तमिल भाषा में आलवार भक्तों को वैष्णव भक्त कहा जाता है। तमिल प्रान्त में बौद्धों और जैनों का विरोध करने के लिए शैवों (नयनार) और वैष्णवों (आलवार) ने मिलकर एक धार्मिक क्रांति की। आत्मिक भावों का प्रचार करके भक्ति भावना को जगाना इनका उद्देश्य था। आलवारों ने वेद, उपनिषद, गीता से गृहीत भक्ति भावों का प्रचार करके भक्ति भावना को जनता तक गीतों के

Scanned with CamScanner

माध्यम से जनता तक पहुँचाया। आलवारों की संख्या बारह मानी जाती है — 1. ~~स्वोय~~ सरोयोगी, 2. भूतयोगी, 3. भ्रान्तयोगी, 4. भक्तिसार, 5. शठकोप, 6. मधुर कवि, 7. कुलशेखर, 8. विष्णुचित, 9. गोदा, 10. भक्तान्घ्रिरेनु, 11. मुनिवाहन, 12. परकाल। इन आलवारों के लिखे 4000 पदों का संकलन 'दिव्य प्रबन्धम' नाम से किया गया है।

भक्तिकाल का वर्गीकरण -

आचार्य रामचंद्र ने हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल का वर्गीकरण दो धाराओं में किया है —

1. निर्गुणधारा - (अ) संतकाव्य, (ब) सूफीकाव्य।
2. सगुणधारा - (अ) रामकाव्य, (ब) कृष्णकाव्य।

भक्तिकाल

- 1. सगुणधारा
  - 1. रामभक्ति शाखा → रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि 'तुलसीदास'
  - 2. कृष्णभक्ति शाखा → कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि 'सूरदास'
- 2. निर्गुणधारा
  - 1. ज्ञानाश्रयी शाखा → ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि 'कबीर' और
  - 2. प्रेमाश्रयी शाखा → प्रेमाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि 'जायसी'

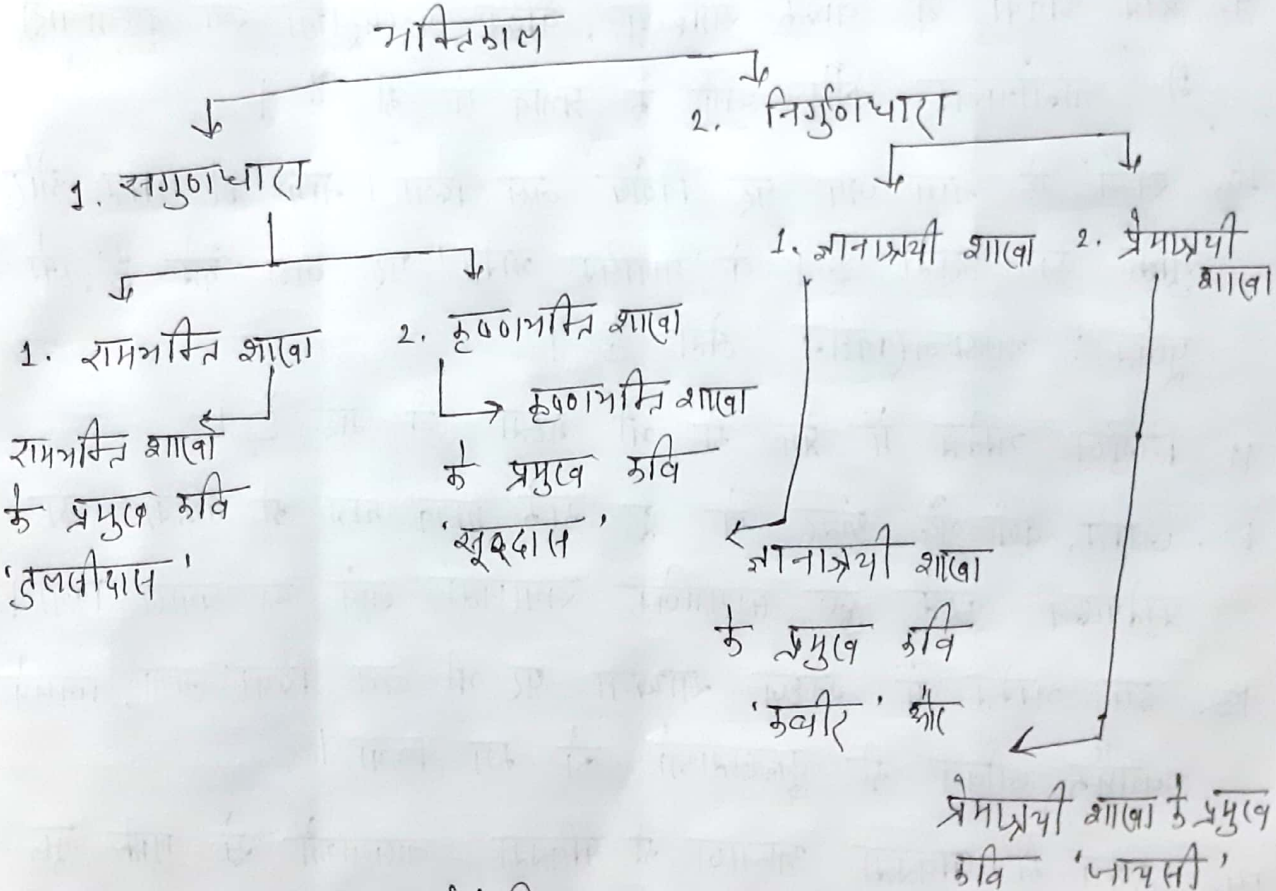

निर्गुणधारा के महत्वपूर्ण बिन्दु —

1. ईश्वर को निर्गुण, निराकार, घट-घटव्यापी, सूक्ष्म माना गया है।
2. निर्गुनोपासना में भक्ति का आलंबन निराकार है, फलतः वह जनसाधारण के लिए ग्राह्य नहीं है।

Scanned with CamScanner

3. निर्गुण भक्ति का संबंध सामान्यतः ज्ञान मार्ग से जोड़ा जाता है।
4. इस भक्ति में 'गुरु' को विशेष महत्व प्राप्त है।
5. निर्गुण एवं निराकार ब्रह्म से भावात्मक संबंध जोड़कर रहस्यवाद को काव्य के में स्थान निर्गुण परम्परा के भक्त कवियों ने दिया।
6. ईश्वर के नाम की महत्ता पर निर्गुण भक्त कवियों ने भी बल दिया है।
7. इस भक्ति में माधुर्य भाव का समावेश होने पर रहस्यवाद का उदय होता है।
8. नाथ पंथियों से उन्होंने शून्यवाद, गुरु की प्रतिष्ठा, योग प्रक्रिया को ग्रहण किया है।
9. संत कवियों ने वैदिक साहित्य, वैदिक परम्पराओं एवं ब्राह्मणों की आलोचना बौद्ध धर्म के प्रभाव से की है।
10. संतों के नाम जप पर विशेष बल दिया। नाम ही भक्ति और मुक्ति का दाता है। वे 'मानसिक भक्ति' पर बल देते हैं, जो पूर्णतः आडम्बर विहीन होती है।
11. निर्गुण भक्ति में प्रेम को भी महत्ता दी गई है।
12. जाति, वर्ण भेद अंतर को दूर करके मानव मात्र की एकता का प्रतिपादन करते हुए सामाजिक समानता लाने का प्रयास किया।
13. इस भक्ति में सहज साधना पर भी बल दिया गया, जिसने धार्मिक जीवन की दुरुहताओं को कम किया।
14. हृदय की पवित्रता, आचरण की पवित्रता, वासनाओं से मुक्ति गुरु कृपा से ही संभव है ऐसा निर्गुणोपासकों का विश्वास है।

— × — × —

Scanned with CamScanner

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
तृतीय वर्ष, पत्र - (8)
पाश्चात्य काव्यशास्त्र

प्लेटो का अनुकरण सिद्धांत

यूनान का महान दार्शनिक प्लेटो (428 ई० पू० - 347 ई० पू०) एक मौलिक चिंतक के रूप में विख्यात हैं। वह सुकरात का शिष्य था। अरस्तू इनका शिष्य है। होमर का समकालीन। प्लेटो के समय में कवि को समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त था। वह (कवि) उपदेशक, मार्गदर्शक, संस्कृति का संरक्षक माना जाता था। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- दि रिपब्लिक, दि स्टेट्समैन, दि लाज, इयोन, सिम्पोजियम आदि।

अनुकरण सिद्धांत :

प्लेटो के मत का सार :

1. कविता जगत की अनुकृति है, जगत स्वयं अनुकृति है अतः कविता सत्य से दोगुनी दूर है।
2. कविता भावों को उद्वेलित कर व्यक्ति को कुमार्गगामी बनाती है।
3. कविता अनुपयोगी है। कवि का महत्व एक मोची से भी कम है।

प्लेटो के अनुसार काव्य के प्रयोजन

1. सत्य का उद्घाटन
2. मानव कल्याण एवं राष्ट्रोत्थान
3. आनंद प्रदान करना

Scanned with CamScanner

4. शिक्षा देना

प्लेटो ने काव्य का विरोध चार दृष्टियों से किया

1. नैतिक आधार
2. भावात्मक आधार
3. बौद्धिक आधार
4. शुद्ध उपयोगितावादी

इस प्रकार प्लेटो का काव्य के प्रति जो महत्वपूर्ण बिन्दु हैं वे निम्न हैं —

= प्लेटो काव्य का महत्व उसी सीमा तक स्वीकार करता है, जहाँ तक वह गणराज्य के नागरिकों में सत्य, सदाचार की भावना को प्रतिष्ठित करने में सहायक हो।

= कला और साहित्य की कसौटी उसके लिए 'आनंद एवं सौन्दर्य' न होकर उपयोगितावादी थी। वह कहता है — चमचमाती हुई स्वर्णजटित अनुपयोगी ढाल से गोबर की उपयोगी टोकरी अधिक सुंदर है। उसके विचार से कवि या चित्रकार का महत्व 'मोची' या 'बढ़ई' से भी कम है, क्योंकि वह अनुकृति मात्र प्रस्तुत करता है।

= सत्य रूप तो केवल विचार रूप में अलौकिक जगत में ही है। काव्य मिथ्या जगत की मिथ्या अनुकृति है। इस प्रकार वह सत्य से दोगुना दूर है। कविता अनुकृति और इसलिए अनुपयोगी है, इसलिए वह प्रशंसनीय नहीं अपितु दंडनीय है।

Scanned with CamScanner

- वह कवि की तुलना में एक चिकित्सक, सैनिक या प्रशासक का महत्व अधिक मानता है।
- वह कहता है कि कवि अपनी रचना से लोगों की भावनाओं और वासनाओं को उद्वेलित कर समाज में दुर्बलता और अनाचार के पोषण को भी अपराध करता है। कवि अपनी कविता से आनंद प्रदान करता है परंतु दुराचार एवं कुमार्ग की ओर प्रेरित करता है इसलिए राज्य में सुव्यवस्था हेतु उसे राज्य से निष्कासित कर देना चाहिए।

= उसका मानना था कि किसी समाज में सत्य, न्याय और सदाचार की प्रतिष्ठा तभी संभव है जब उस राज्य के निवासी वासनाओं और भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए विवेक एवं नीति के अनुसार आचरण करें।

= वह चुनौती देते हुए हमसे पूछना चाहता है कि क्या कविता से किसी को रोगमुक्त कर सकती है? क्या कविता से कोई युद्ध जीता जा सकता है? क्या कविता से श्रेष्ठ शासन व्यवस्था स्थापित की जा सकती है?

= प्लेटो के अनुसार मानव के व्यक्तित्व के तीन आंतरिक तत्व होते हैं —

1. बौद्धिक
2. ऊर्जस्वी और
3. संतुष्टा।

Scanned with CamScanner

= काव्य विरेचनी होने के बावजूद लेखों ने वीर पुरुषों के गुणों को उभारकर प्रस्तुत किए जाने वाले तथा देवताओं के स्तोत्र वाले काव्य को महत्वपूर्ण एवं उचित माना है।

— x — x —

Scanned with CamScanner

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
प्रथम वर्ष

हिन्दी गद्य के विकास में द्विवेदी युग की भूमिका :

भारतेंदु के पश्चात् हिन्दी गद्यधारा को महत्वपूर्ण मोड़ देनेवाले 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' हैं। उनकी साहित्यिक सेवाओं और प्रभाव के कारण ही हिन्दी गद्य का दूसरा युग सन् 1903 से सन् 1920 तक का समय 'द्विवेदी युग' के नाम से जाना जाता है। भारतेन्दु युग के लेखकों ने साहित्य रचना तो बड़े वेग से ही, किन्तु वे भाषा का परिष्कार न कर सके। उसमें व्याकरण की अशुद्धियाँ, पद-विन्यास एवं वाक्य विन्यास सम्बन्धी त्रुटियाँ बनी रहीं। आचार्य द्विवेदी जी ने सन 1903 में 'सरस्वती पत्रिका' के संपादन एवं प्रकाशन द्वारा भाषा का परिमार्जन, संस्कार और परिष्कार का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने साहित्यकारों का ध्यान हिन्दी गद्य की त्रुटियों की ओर आकर्षित किया। अपरिपक्व लेखकों की भाषा शैली की आलोचना की, नवयुवक साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया। उनकी प्रेरणा और मार्ग दर्शन पाकर गद्य की विविध विधाओं में उच्चकोटि के साहित्य का निर्माण हुआ। द्विवेदी जी ने भाषा का एक स्तर स्थापित किया। शब्द भण्डार की वृद्धि के साथ भाषा को गहन भावों को व्यक्त करने के

Scanned with CamScanner

योग्य बनाया। द्विवेदी जी ने खड़ीबोली को गद्य की भाषा ही नहीं, पद्य की भाषा भी बनाया।

द्विवेदी युग में निबंध साहित्य का विशेष विकास हुआ। विचारात्मक, वर्णनात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक, कलात्मक आदि सभी प्रकार के निबंध इस युग में लिखे गए। द्विवेदी जी स्वयं श्रेष्ठ निबंधकार थे। इनके अतिरिक्त अध्यापक पूर्ण सिंह, गोपालराम गहमरी, माधवप्रसाद मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, बालमुकुन्द गुप्त आदि इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं। हिन्दी कहानी का भी प्रारंभ द्विवेदी युग से ही माना जाता है। सरस्वती पत्रिका में अनेक मौलिक कहानियाँ प्रकाशित हुईं। किशोरीलाल गोस्वामी, गुलेरी, बंग महिला आदि इस युग के प्रसिद्ध कहानीकार हैं। इस काल में मौलिक और अनुदित नाटकों की भी रचना हुई। मौलिक नाटकों में बद्रीनारायण भट्ट, किशोरीलाल गोस्वामी आदि प्रमुख हैं। दूसरी ओर लीलाराम, रामकृष्ण वर्मा, सत्यनारायण आदि ने संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी के नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त उपन्यास, आलोचना आदि विधाओं का श्रेष्ठ गद्य साहित्य का सृजन हुआ।

इस युग में नें हिन्दी साहित्य को अनेक नवयुवक रचनाकार प्रदान किये और हिन्दी भाषा को व्याकरण सम्मत रूप प्रदान किया। 'सरस्वती पत्रिका'

Scanned with CamScanner

के माध्यम से द्विवेदी युग ने हिन्दी की आलोचना विधा का मार्ग प्रशस्त किया। इस युग में द्विवेदी जी के अतिरिक्त बालमुकुन्द गुप्त, माधवप्रसाद गुप्त, माधव पंडित पद्मसिंह शर्मा, अध्यापक पूर्णसिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, मिश्रबन्धु, प्रेमचन्द आदि लेखकों ने हिन्दी गद्य साहित्य की श्री वृद्धि की। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, गुलाबराय, श्यामसुंदर दास जैसे लेखकों ने इसी युग में श्रेष्ठ साहित्य रचना प्रारंभ कर दी थी, जिन्होंने आगे चलकर हिन्दी गद्य साहित्य को गरिमा के उच्च शिखर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस युग के साहित्यकार में जहाँ एक ओर राष्ट्रीय भावना पायी जाती है, वहीं दूसरी ओर इसमें नारी सुधार और समाज सुधार की प्रवृत्ति भी विद्यमान है।

—————x—————x—————

Scanned with CamScanner